कबीर के पद

1) संतो देखो जग बौराना

कबीर दास प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से वाह्यडंबर का विरोध किया है। कबीर दास यह कहते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति वाह्याडंबर से नहीं किया जा सकता। उसे तो केवल अंतरात्मा की शुद्धता से प्राप्त किया जा सकता है। जो लोग सत्य का अनुसरण करते हैं उन लोगों को लोग मारने दौड़ते हैं और जो केवल झूठी बात करके लोगों की प्रशंसा करते हैं उन्हीं की वाहवाही होती है। कबीरदास कहते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति तो तभी संभव है जब हम आपने अंदर बसे हुए परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचाने। दिखावा करने वाले हर एक धर्म के अनुयायियों का कबीरदास कड़ा प्रहार करते हैं। कबीरदास उन्हें पाखंडी और ढोंगी मानते हैं।

कबीरदास कहते हैं हे संतो देखो आज यह जग बौरा गया है। पागल हो गया है। अगर इनको सच्ची बात बताएं परमात्मा तक पहुंचने की सच्ची मार्ग बताएं। जो सत्य के मार्ग का अनुसरण करता है तो लोग उन्हें मारने दौड़ते हैं। और जो लोग झूठी बात करते हैं परमात्मा तक पहुंचने के गलत मार्ग बताते हैं ऐसे लोगों पर लोग सहज ही यह संसार विश्वास कर लेते हैं। कबीर दास दिखावा करने वाले ढोंगी एवं पाखंडी लोगों के ऊपर करारा प्रहार करते हैं। चाहे वह कोई भी धर्म के हो। कबीर दास हिंदू धर्म से जुड़े हुए लोग जो दिखावा करने वाले पाखंडी लोग हैं उन पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं इन्होंने अपने जीवन में अनेक लोग देखे हैं जो प्रातः सुबह उठकर स्नान ध्यान करके व्रत और उपासना करते हैं। ऐसे लोग पत्थर को तो पूजते हैं लेकिन अपनी आत्मा को नहीं पूजते। वास्तव में वह परमात्मा उनके अंदर हृदय में बसा है उसे न पुज कर बाहर दिखावा करने के लिए नियम व्रत का पालन करते हैं। और उसकी पूजा करते हैं। ऐसे लोगों को कबीर दास अज्ञानी कहते हैं। आत्मा के वास्तविक मर्म को ये जानते ही नहीं। इसका इन्हें ज्ञान ही नहीं है। कबीर दास इस्लाम धर्म के अनुयायियों एवं पीर औलिया के ऊपर व्यंग करते हुए कहते हैं। उन्होंने अनेक धर्मगुरु देखे हैं जो प्रत्येक दिन कुरान का पाठ करते हैं। इसके बाद भी यह परमात्मा के स्वरूप को नहीं जान पाते। वे स्वयं तो अल्लाह के रहस्य को नहीं जानते और अपने शिष्यों को उसके रहस्यों को कैसे बता सकते हैं। वे अपने शिष्यों को अल्लाह तक पहुंचने का मार्ग कैसे बता पाएंगे। ऐसे शिष्य भी धर्म गुरुओं के चक्कर में आकर अपने वास्तविक मार्ग से भटक जाते हैं। कबीरदास जी योगी और ढ़ोंगियों के ऊपर प्रहार करते हुए कहते हैं कि ऐसे योगी जो दिखावा करने के लिए ध्यान की मुद्रा में बैठे हैं और यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि वह प्रभु की ध्यान में बैठे हुए हैं। प्रभु की साधना में लीन है। परंतु ऐसे ढ़ोंगियों के मन में अत्यधिक गुमान भरा हुआ है। इनके अंदर अहंकार भरा हुआ है। वह परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचान ही नहीं पा रहे हैं। कुछ लोग पीपल के गाछ, कुछ पत्थरों पर पूजा करेंगे, तीर्थ की बात करते हैं, मंदिरों में यात्राएं करेंगे, और इस कारण उनके मन में अभिमान भर गया है। और इसी अभिमान के कारण यह परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को भुला दिए हैं। कुछ लोग टोपी पहनते हैं अनेक प्रकार की मालाएं धारण करते हैं। तिलक लगाते हैं। और इन्हें देख कर लोग भ्रमित हो जाते हैं कि यह लोग ज्ञानी है। पर वास्तव में यह ज्ञानी नहीं बल्कि ढोंग करने वाले लोग हैं। ऐसे लोग साखी और शब्द में लिखे हुए गुरु के मंत्रों का पाठ भी करते हैं। पर इन्हें अपनी आत्मा की खबर ही नहीं है। इन्हें परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का भान ही नहीं है। हिंदू कहता है कि मुझे राम ज्यादा प्यारा है। मुसलमान कहता है कि अल्लाह प्यारा है। दोनों ही अपने धर्म के परमात्मा को बढ़ा चढ़ाकर बताने का प्रयास करते हैं और इसी कारण दोनों आपस में लड़ लड़ कर मरते हैं। लेकिन दोनों परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचानते ही नहीं है। ऐसे पाखंडी धर्मगुरु लोग घर-घर जाकर मंत्र का पाठ करके परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग बताते हैं। पर अपनी ही बातों पर स्वयं ही गौर नहीं करते। भौतिक सुख सुबिधा में लिप्त रहने वाले ऐसे गुरु स्वयं तो डूबेंगे ही। इनके जो शिष्य हैं यदि इनके चक्कर में आ जाए तो वह भी डूब जाएंगे। ऐसे लोगों को अपने जीवन के अंत काल में पछताना पड़ेगा। क्योंकि यह पाखंडी धर्म गुरुओं के बताए हुए मार्ग पर चल रहे हैं। कबीरदास जी कहते हैं कि यह सब जो ढोंगी लोग हैं भ्रम में जी रहे हैं।और यह मान बैठे हैं कि यही ज्ञानी है। इन्हें परमात्मा तक पहुंचने का सच्चा ज्ञान प्राप्त हो चुका है। पर वास्तव में ढोंगी है, पाखंडी है। और इसीलिए इन्हें परमात्मा के वास्तविक मर्म को भुला दिया है। कबीरदास कहते हैं कि मैंने इन लोगों को कितना समझाया लेकिन यह लोग नहीं मानते। प्रभु तो बड़े सहज हैं, सरल हैं और वे तो बड़े ही सहज साधना से ही प्राप्त हो जाते हैं। इसके लिए किसी भी प्रकार का दिखावा करने की आवश्यकता नहीं है।

इस पद में सधुकड़ी भाषा का प्रयोग किया गया है। और धार्मिक बाह्य आडंबर, दिखावा, पूजा, व्रत, छापा, तिलक, उपासना आदि पर करारा व्यंग्य किया गया है। कबीर दास ने हिंदू और मुसलमान दोनों को इस पद के माध्यम से सुधारने का प्रयास किया है। और यह बताया है कि ईश्वर तो बड़े ही सरल और सहज भाव से ही प्राप्त हो जाते हैं।

2) "अरे इन दोउन राह न पाई।"

मैं प्रस्तुत पद में कबीर दास ने हिंदू एवं मुसलमान दोनों धर्मों के लोगों पर व्यंग करते हुए इनके आचार विचार और रीति-रिवाजों पर व्यंग किया है। कबीरदास कहते हैं कि इन दोनों को कितना भी समझाया जाए पर यह लोग समझने वाले नहीं है। यह राह पर आने वाले नहीं है। हिंदू धर्म के पंडित और पुरोहित जो अपने आप को श्रेष्ठ कहते हैं दूसरी तरफ मुसलमान के पीर और आलिया भी अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने में लगा हुआ है। दोनों आपस में लड़ते भिड़ते ही रहते हैं। कबीर दास दोनों के अंदर की बुराइयों को उजागर कर इन्हें सच्चा मार्ग दिखाने का प्रयास किया है।

कबीरदास कहते हैं हिंदू धर्म के ब्राह्मण एक तरफ तो अपनी गगरी तक छुने नहीं देते और अपने को श्रेष्ठ कहता है। दूसरी तरफ यह वेश्याओं के पैरों के तले सोता है एवं उनके तलवे सहलाता है। इसमें उनकी ब्रह्मत्व नहीं जाती। दूसरी तरफ मुसलमान के पीर औलिया मुर्गा मुर्गी खाते हैं और जो अपने को श्रेष्ठ कहता है। अपने ही घर में खाला की मौसी की बेटी से विवाह रचाता है। कबीर दास कहते हैं कि यह कैसी रीत है। बाहर से एक मुर्दा अर्थात मरे हुए जानवर को लेकर घर में आते हैं और उसे खूब धा कर पोछ पाछ कर बड़े ही आनंदपुर्वक बनाकर खाते हैं। और इनकी घर की महिलाएं आपस में बैठकर के खूब बढ़ाई करते हैं। कबीर दास इनके इस रीति रिवाज को देखकर कहते हैं। कि हमने तो भाई हिंदुओं की हिंदूआई भी देखी और तुर्कन की तुरकाई भी। पता नहीं यह आपस में लड़ भीड़ करके अपने को कैसे और क्यों श्रेष्ठ साबित करना चाहते हैं। परंतु अपने अंदर की बुराइयों को दूर करना नहीं चाहते। पता नहीं यह लोग किस राह पर पहुंचेंगे कहां जाकर रुकेंगे इनको देखकर यह अनुमान लगाना बड़ा ही मुश्किल है।

3) "संतो आई ज्ञान की आंधी रे।"